आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 2/जून 2025
Received: 15/6/2025; Published: 28/6/2025

कविता

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

डॉ.दुर्गारत्ना . सी
अधिष्ठाता - कला संकाय & हिंदी विभाग अध्यक्षा
विवेकानंद कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय (स्वायत्त) पुत्तूरु
पुत्तूरु तालूक-574203, दक्षिण कन्नड़ जिला, कर्नाटक।
Mobile No: ८१०५६००५७४
Mail id: durgarathna@vcputtur.ac.in

डॉ.दुर्गारत्ना . सी , बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ , आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 2/जून 2025,** (151-152)
https://doi.org/10.5281/zenodo.15777114

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

पापा, पापा, मेरे पापा,मेरी बात सुनो

तुम्हारे जिगर के टुकड़े की चीख सुनो ||

माँ की कोख के इस अंधेरे से

मैं बाहर आना चाहती हूँ

पापा, मैं जीना चाहती हूँ

मुझे भी जीने का अधिकार है।

मैं तुम्हें खाना खिलाऊंगी

माँ की तरह सेवा करूँगी

मैं तुम्हारा नाम रोशन करूँगी

तुम्हारे भाग्य का द्वार खोलूँगी ।।

कल मैं दादी को माँ से कहते सुना-

" अगर इस बार भी लड़की हुई तो? अभी हटा दो।"

मैं पूछती हूँ- "बेटा और बेटी में अंतर क्यों है?

क्या जीवन में वे दोनों बराबर नहीं है?" ||

पापा,क्या तुम्हें मेरी चीख सुनाई नहीं देती है?

क्या तुम्हें माँ की आहें दिखाई नहीं देती है?

क्या तुम्हारी जन्मदात्री स्त्री नहीं है?

क्या तुम्हारी धर्मपत्नी स्त्री नहीं है?

फिर तुम 'बेटे' को ही क्यों चाहते हो?

तुम मुझे क्यों मिटाना चाहते हो? ||

माँ की गोद में सोना चाहती हूं

मैं पूरी दुनिया देखना चाहती हूं

लो, अभयवाणी सुनाई दे रही है

"बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ "||

हाँ पापा, बिटिया का पालन करो

उसे अपने पंख फैलाने दो

उसे आसमान में ऊँची उड़ान भरने दो

उसके लिए कभी 'लक्ष्मण रेखा' मत खींचो

ओ मेरे पापा, गर्व से दुनिया को बता दो -

"मैं बिटिया का बाप हूँ।"

****